

ॐ नमो भगवते
शुक्लार्क
शुक्लार्क
कोकोनरु
संज्ञा
गुल्लो
दुसेय
कथ्युन
गुल्लन
नवात
समरुग
नखनगु
निविन
खयगुन
वरुधनरु
नकोमि
रुवया ॥

ॐ नमो भगवते

यन

बहुनिवीक

साहोगा

पिप्याति

हृति

मनवधवाक

लोवातिनयन

प्रसमर्मक

धनुनवीक

यानाक

गंधक

मनवधवाक

महाकर्मक

^{उधनद्वारा}
 १ अथ कृष्णगायत्री ॥ तत्सु नूषाय विमहं महो देवाय धिमहि तन्नो कृष्णाय दया ॥
 २ अथ वैश्या गायत्री ॥ तत्सु नूषाय विमहं पुत्रा देवाय धिमहि तन्नो वैश्याय दया ॥
 ३ अथ सूद गायत्री ॥ तत्सु नूषाय विमहं महास्यंताय धिमहि तन्नो सूदय दया ॥
 ४ कथुनीर्म १५ वराचनर्म १५ वृद्धिमि नर्म ३ विषय नर्म ३ कर्बज्यर्म ३ महे विर्म ३
 धर्तवृर्ष्याद कृष्णाल दुयाल सन कृति विर्यं यति विनर्म १५ (गनकं म्माय स धेनवः
 दिन १ सुथ ४ वनक्ति ३ कृष्णाने कृ २१ ॥ विमवा न ता मवा स्या वा द खति रु स्य

^क ^{देवा}
 श्रीपुत्रवचनम् ॥ श्रीद्वारा च ॥ रुद्रया ॥ सकला विद्या ॥ पूता अधिगता मया ॥ शायते ॥
 अहमि कुमिकवर्चयन्त्रा
 वरुण ॥ यत्र तत्रा नाथ क
 यावति वसामि सुन्दरियात्
 विग्रहं ॥ यतिवामनयित्वा देवेला सुविजयी रुवें ७ ॥ जयान सकलान् देवान् यत्न

लामधुसूदनः॥ वक्राहर्षिवितनूतं यद्व्याहीरुमायकः॥ धनाविषः कृतवापि वा
 सवस्त्रिदलधनः॥ यस्याय
 यत्रनिष्ठायाः साधकस्यः क
 वासुया० कवचस्यास्य
 जीदेवतावाल्हेनवी॥ धर्माधिकाममाकम् प्रवित्तिमागच्छकीर्तितः॥ अर्धेनाविन्दुना
 हेनवा २ धि २
 मवि २ कि २ ३ ४ ५

दोहः॥ कामः॥ लोकोः॥ लनीयूतः॥ ह्युमानस्यत्र यूतः॥ सनीवीरुगुयामिना॥ वालन
 मनित्रः॥ याहु विलुतादयूता
 त्रिका॥ दलोपाहुवाग्वीज
 युर्मसदावहु॥ सनस्यतीयुदा
 लोपाहुकोरुजो॥ मद्यमीरुनवीयाहु कनोसु सदावहु॥ ददयमीव कः॥ पाहु कोः
 कनो २
 मिसा २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

लुधत्रीसायसयामायनित्रकुड ॥ ॐतिर कथितं दविस्तानासावतनंमरुत ॥ ३
 लाकविकुर्यंतामकवर्चममृखादिर्त ॥ यय१० त्ययताह्वोयूजाया१ रुलेमापुया
 त ॥ स्यइमिडुयलवनल श्रीवालीवसलुत ॥ य१४ रुलीतात्रलकातनावाही
 तोवनवासलिलालअवाबादसत्यायांयतिवादिनावानाह १ यकातहउतं ॥ ३
 टवा ॥ यत्रलुदलुदतलाचिरीता गुनाथकोपादयिक कृसाकृत् ॥ यय १०

३

वी० यय१० लुसधं यसमरुहायतिमाकयिच ॥ ३ लाकविकुर्यंतामकवर्चममृखादि
 तं ॥ यिलिखतु ॥ ३ टिकांस्वर्गुस्याधनययदि ॥ क१८ वादकिवाही ॥ ३ लाकविक
 यिरुवतेरतर्दंयाय ॥ ३ लाकविकसूमानिच ॥ ल श्रीसनस्वतीतस्यनिवसहव
 नमृख ॥ यतकवचमस्तुत्याय ॥ ३ नवीयर्ता ॥ वातायायलुग विद्यादनिडामत्युमापु
 यात ॥ ३ तिधीत्रुडयामले दवीध्वनेर्वा द ॥ ३ लाकविकयनामवालाकवर्चसंपूर्ण ॥

अथ सूक्तं ॥

[illegible][illegible]

मलवर्तनदो नलो यज्जली मक कुं

(मात्रतनयवतं दृष्टि आत्रतनयवतं मनः तावत्यानैय कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ ॥ यत्तु निवदय ॥ अलिया प्रमिदं ॥
 दीयतां धिनिता त्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 यमये प्रमिदं ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 कम्पका नाना नद विनिगद्यते ॥ कवा र्या यज्जली मक कुं ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 वागल कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 वृषा मूला धात्रे कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 प्रादि स्तुते मिति मला मा अ कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 सौन्दर्य लक्ष्मी कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥

5

कल

स २

(सिंदूर मन्त्र ॥ ॐ श्रीं क्लीं क्लीं क्लीं नमो भगवते महायज्ञाय नमः ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 माहिने सौन्दर्य लक्ष्मी कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 थ २ श्रीं क्लीं क्लीं क्लीं नमो भगवते महायज्ञाय नमः ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 उद्धा कात्रे मूल नैधाय य ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 अमृति तुला ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥
 कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥ अत्रिंतीं कृत्तियद्युधानमथयम् ॥

ॐ नमः शिवाय (गन्धर्वी विकटर्षिकः) अष्टाश्वत्थसूत्रसूत्रकवलेपत्रिभुक्त
 कर्मप्रवर्तते सकलकर्मरुतनाथितिरुं महाप्रभुयो (गन्धर्वी निखादविक्रिज्जि)
 रुट्ठाहीवीषद ॥ अनेनमनेनमृगीमूदयानिखावधनं कुर्यात् ॥ अतिनिखावन्धे ॥ ५
 १ अक्षधवकर्मकेतयो जानाति सदनिक ॥ गुलाकृर्कस्य वायुयः कान्धर्मवसुक्त
 दितिदिकोर्लवोर्लकोर्लवक्रिकोर्लवोर्लव ॥ ॥

ॐ नमः शिवाय (गन्धर्वी विकटर्षिकः) अष्टाश्वत्थसूत्रसूत्रकवलेपत्रिभुक्त
 कर्मप्रवर्तते सकलकर्मरुतनाथितिरुं महाप्रभुयो (गन्धर्वी निखादविक्रिज्जि)
 रुट्ठाहीवीषद ॥ अनेनमनेनमृगीमूदयानिखावधनं कुर्यात् ॥ अतिनिखावन्धे ॥ ५
 १ अक्षधवकर्मकेतयो जानाति सदनिक ॥ गुलाकृर्कस्य वायुयः कान्धर्मवसुक्त
 दितिदिकोर्लवोर्लकोर्लवक्रिकोर्लवोर्लव ॥ ॥

प्रोक्तं दयया ह पुत्रो देवममानुषं शास्त्रानुश्रुत्य श्रीमद्वायुपुराणतया जायते
 सर्वदा या ह जातु जयं गच्छति यथा ह विदुः सर्वदा या ह सर्वदा हर्षेण सायकं शयनं दयय ॥
 तिर्यग (सप्तम्यमदं) ॥ कवचं सर्वं सिद्धं सर्वं विद्याविमानकं । सर्वं सिद्धं कर्म साकल्यं
 सर्वं सायविमानं ॥ सर्वं यं सर्वं दं साका ल्यं सर्वं कर्म कर्म ॥ एहं प्रीति ज्ञानं ॥ अथ यानि
 पुत्रो जायते ॥ य ॥ तं पुत्रो नोदहा नानमाशा कतकलम् । धनं कर्म कर्म दं किं कवचं यत्र
 पृष्ठ २

पूजितं ॥ समाता किमहं नानि ज्ञेयानि कवचं यत्र । हविर्दममहं नानि कवचं यत्र रुतलं ।
 किमन्ये तस्य दाता ये यशसः कथं तामिमां ॥ इति हविर्दमगलेन कवचं समाहृतं ॥
 इन्द्रमणिं वायं ॥ रुतं वनं ददवदं सर्वं मायं प्रयुजितं ॥ सर्वं मन्त्रं धिर्दं कवचं तय
 कालिर्तं ॥ आशयं यमं कुरु कवचं मयं कालं । सर्वं वक्रा कर्म दं यदि मन्त्रं किमपि
 ॥ एहं गवान्वायं ॥ आशयं मन्त्रं कुरु कवचं यमं दं मन्त्रं ॥ यं किं कुरु ॥ सदा निवेदं दं सायं

काशीसिद्धोदितियाग ॥ निरामं सर्वदायाह ॥ प्रासादाय ॥ सदाविव ॥ अरु क न ॥ स नूया
मं व द न न म ह ॥ य ॥ क न त ॥ ग न ॥ रु ॥ मं य वि वे क ॥ मृ ॥ य ॥ य वि वे क ॥ मृ ॥ य ॥ य वि वे क ॥
अयु न क रु मं स न ॥ व त मू ल म मा सी ना ॥ द कि ल मू र्ति न व य ॥ स द म म स र्व दा या ह ॥ य ॥
म ह स नू य धृ क ॥ द वि ल न म को म नु ॥ क कि म य नि व क ॥ वि व न म ती ल क ॥ क
न क रु म र्व दा ॥ वि का म नि र्वि ज नू या ॥ मृ ॥ न वी य न ॥ स द न क रु मं य ॥ स र्व मं य

प्रदायक ॥ न का क न ॥ स क ल म ॥ कू ट नू यी म ह ॥ य ॥ म र्क ॥ रु ॥ न व नि र्वि ॥ मं य नि
न क रु ॥ रु मू न को म न य ॥ य ॥ य वि वे क ॥ म म द न ॥ य ॥ म म य नि व क
॥ रु ॥ रु न म म य ॥ स य जा त स नू य धृ क ॥ वृ ॥ न क क र्ति वि क र्ति न व ॥ रु ॥
या त ॥ का ल य ॥ य ॥ स ॥ रु ॥ रु ल म म नू या त ॥ य ॥ का ल य ॥ य ॥ क र्ति न म म
॥ क ॥ रु ॥ य ॥ य ॥ य ॥ क र्ति न म म नू य धृ क

युद्धेन जयमाप्नोति, धृतवादेन साधकः। कवचं ध्यात्वा ययुः साधकादधिकं लभते। देवा
मनुष्या गंधर्वा वल्गवस्त्यनर्गजयः॥ कवचं लिखन् साधुः ध्यात्वा ययुः तमानसः॥ कवचं त
द्यद्वेन लिखन् साधुः सद्यः॥ हृत्पुष्पं लिखन् साधुः सुकृतं न वदति। प्रकृतं न वदति
विष्णुं कृत्वा ध्यात्वा ययुः॥ सद्यः सद्यः सद्यः॥ सद्यः सद्यः सद्यः॥ सद्यः सद्यः सद्यः॥
तद्यः सद्यः सद्यः सद्यः॥ सद्यः सद्यः सद्यः॥ सद्यः सद्यः सद्यः॥ सद्यः सद्यः सद्यः॥

[illegible]

अथ किं पश्चात् कर्तव्यं तामवाक्यं कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥ तत्रान्तर्गतं
हेतुवादं सप्तमं पदं पश्येत् ॥ कर्तव्यं तामवाक्यं कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥
रक्तमङ्गुलिं विवर्ज्य तदा तस्य मङ्गुली ॥ द्वादशं पदं पश्येत् ॥
तस्यापि ॥ हस्तावतं चन्दनं लेपितानां मृगधूपं विवर्ज्य ॥ नित्यं विनीतं
मनोहरानां मालां गन्धं दहति हेतुनी ॥ ॥

अथ जम्बादि ॥ निवर्ज्य विवर्ज्य तस्य मङ्गुली ॥ मुखं निवर्ज्य कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥
तस्य मङ्गुली ॥ मुखं निवर्ज्य कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥ मुखं निवर्ज्य कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥
विनिर्गम्य ॥ ॥ अथ जम्बादि ॥ निवर्ज्य कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥ मुखं निवर्ज्य कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥
नित्यं विनीतं ॥ विमूककृत्वा तस्य मङ्गुली ॥ कर्तव्यं तामवाक्यं कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥
धरा ॥ मुखं निवर्ज्य कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥ मुखं निवर्ज्य कृत्वा सप्तमं पदं पश्येत् ॥

कृत्वा साक्षात् तानि ह्येव यथा कलहस्यदा ॥ इति आचार्य ॥ ॥ लूयनाद्यसहस्रानि कानि

गणनिर्माणं यान्त्रिकमिति ज्ञेयं ॥ इति आचार्य ॥

एकालिका ये विग्रहं गमनात्तानि नीचं महोत्तमं यान्त्रिकं यथा ॥ अथा ४ साधनमार्गं २२
ममहायातककोट्य ४ मर्त्यं यत्तयमाया निःसाधकस्य नवान्यथा ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥
अवाभूदवायं नमः ॥ १६ ॥ नमो रगवतस्तु नमः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

निष्ठा ७ सत्यं तन्मना वमः तव सहाय्यादेवि कथितं कथयं तु ॥ नदर्थकस्य विदुः
यदीच्छेदात्मना हितं ॥ अथ यं गंधधूमाद्यैः ४ कथयं मन्त्रादिर्तः ॥ ततोऽर्चिता महादेवि नमः
देवानर्चय ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥
जुवन्तो विन्दुविन्दुयुगात्तिर्तः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥
निघ्नवायासादमन्त्रदः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

ल्यथेन। यदुत वचसुर्थं मा। मसूद वदा वचं॥ ॥ सत्यं कमादुर्वर्तु ४ की नय मधु
 रुजं ४। उता यापूजिता देवी, द्युतन सेव्यं जाति हि ४। मधुरि ४ सेव्यं वल्लुमु, पूजिता द्याय नं
 जनीया कलो देवी, केवलेना सर्वे विरि आमलं वा कला ७ कथनं वा क्रमं ८। आधिकान्ति नं
 को न ववा क्रमं ले सुधा, द्युतन नृप वं नं ४। माकि केवले वल्लुमु, आसवे ४। पूद जाति हि विना
 रं ववा क्रमं ॥ ॥ ७ गलन यन म ४। ७ न मा नृप नाथ य ॥

१
 २

नृदस्तु

दांशी। सिद्धि ल श्री नम ४॥ यो नृप ता हि नृप ता रुज दल कयू ता पश्चव कु। विनेता वम
 यकि विनेता यम कटत नम (अ द द लो रुत सक्ति। ७ नृप ता विनृप ता ममृ त मय त
 नृ विनृप ता यम यम, या रुषी सिद्धि ल श्री वरि म त रुत द लु ल नृप ता दध न। ॥ आ
 यदा नृप ता वकी, यवी ते द्या वि द्या यी। विष नृप ता रुत नृप ता सिद्धि ल श्री न मा मृ द
 ॥ ७ नृप ता युति नम रुत य। यल हंति यता लन ४। रुग मा रु म नृप ता। त सा ध नृप ता रुत

४॥ ॥

उत्तमः श्री सिद्धि लक्ष्मी ॥ उद्गुल्लाम्बुज कर्तुं काय विगता श्री सिद्धि लक्ष्मी यथा कर्तुं वृक्ष
ठिकं नृ कृत्य वलानि ॥ लोचनान्मय हा । संसा वा र्धु व इ ॥ ख र्प कल हली ति ॥ कौ य
नो य चंदो श्री मर्त्यं य मूखा म्बुजा दन रुजा धत क्षि ता या रु व ॥ आ न्म यू व ति या य
हा विही जग इ ॥ खौ य वि धं सिती । ग कृ स मि धी क्रा न्म का वि ही सदा र्प सा न मा हा वि
ही (य य स्का न हा का न हा धे व व न या ल म य र्वा वि ही ल्हा नि र्प सू त रा म री कृ ह ल

श्री सिद्धि लक्ष्मी सर्व समार्क ॥ ॥ म मि ॥ यु जा या ति ल्हे न म य ही कृ न्द म द य । द व ता सि द्धि ल श्री स्था त मा
या वी उ त्प दी ऊ की ॥ कृ र्च नु ग मु ग कि ॥ या द ति वी ज नु की ल क । यु व र्म मा य य । रु कृ कृ र्च वी उ नु त
ऊ ती । वो म त ति ॥ म धं मा यी । को ध र्वा ज ॥ न मिका । के नि र्वा कृ न्द वी उ नु त म ॥ क त र ल क थ
उ त्प द य सा दि ॥ त त ॥ ध्वा तं ॥ नृ द म्ब कृ ति नृ द दि ॥ ॥ १ क म्बु नी कृ कृ म र्थ व । क य र्च क म ल क
व । क का नं य कृ कृ दे वि । द व ना यी गि का व र्ण ॥ ॥ १ क म्बु नी मां स म ल्हा र्क कृ कृ म नि नि ना
म व । क म लं यु व नी मि द्या । क म लं मु द्रा वि धी य क ॥ ॥

स्त्रीगणमायनमहाश्रीनिगवालाप्रतिमायहलासंजयविद्वान्
 वींसीवेद्यदेवीकूलमभिरुह्यसंतप्ययेत्सर्वसंगदिव्य॥१॥
 स्मृतवादिर्विधमहश्रमयान्समानव्या। तद्वदलकूल
 संयाक्रांतेताएव॥२॥मात्रेनमभ्रासुतसामिन्व्या। त
 देहा। एवमकमालनिविर्वैद्ययव्विवाधयानिचविभाहेनिमा

देवीं। सद्यमवावेसगताद्यमव्वसंयुज्यंशुव्वसमद्विजय॥३॥दिर्मापुयजा
 तयममभ्रविबुद्धसंयविहकामिदेवी। विनादमानतीविवादि
 यैरुवसांतयं॥४॥सुममदंलसुतहकामविशवयंनि
 तह्यदंलसुतनादमाध्रुका। मिदेवींयेनमात्मव्या॥५॥सह
 रुमानां सुकंगैरुक्रमममृयव। तन्मभ्रदंलसुतहकामविशवयं

[illegible]

(य) कटाशा अथागिनो महावीनायनायना ॥ सानिधमन्यागंस्मिन् कुर्वन्त्यनिवाहूया ॥ इ
तिस्मिन्निवसिष्या ॥ अतीविकीर्त्या ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दत्तात्रेयः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
विद्येर्गवद्वर्कनिधिः कमलजं दुर्गा विविनममर्थः । तद्धिर्द्वि विविधिगुर्न समनिमान्मा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नर्गमन विरुणीतिस्मृता विगुणिता वेष्टं क्वचन्मुद्रा । कामा कर्मकर्ता भूर्नगकेसूमा संको
तो सिद्धिदा । सर्वज्ञावनिनीयमूनविनिष्ठा कादद्युधानाङ्गना । कामर्गीमविद्विजिती रुगवती नित्या
वनत्वातता । मन्दावद्ममन्दिनेमनिमर्थं यम्यक्ष्मी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हतानूयहा । आनन्दादहर्गभूतमनिलया शुद्धामऊर्ध्वरुजं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

वरावत्रमिदंविष्णुं तमीयंवाचकंस्मरं॥ॐ॥ सुकृतायाजगत्सर्वं त्रिवेलातवेह॥ १॥
 स्यस्यमूनवानन्दमर्षोतिर्गुणयत्रनिवन्नुया मनकेनानुया मूकैर्ह्यत्रमकलामान
 विप्रमानुसन्धय॥ मूलं॥ ॥ श्रीमदूर्ध्वविस्मर्त्तका तिकलात्ममुर्वीमता॥ अनुकृताहविद्वन्म
 यासाधवाश्रुता॥ ॥४॥ हंसः॥ तिकलेयवाश्री॥ ॥४॥ अनुकृत्रयवाश्री॥ ॥ अनुकृत्रमम
 किमूकृत्रमूदीत्रयं॥ ॥ॐ॥ नूविन्दुविस्मर्त्तमन्दितांऊऊमानेधुधियक्रियावनीर्तोत्रनिहृता
 यात्रर्गंमूयधवसधिताहीयसाश्री॥ नादानुसन्धनसमाधिरुर्जायोगीधवागर्धदययवृत्ति
 ज्ञानन्दमर्षवत्रसामवाची॥ जानातिर्गद्युनुनाधमव॥ ॥

ॐ श्रीगुत्रवेनमशा वन्देतांमनसादेव्री पुद्गलातस्वभूषिणी॥ पुद्गलायमयाकाह
 पुद्गलाकालेयवाश्री॥ ॥ ॥ अश्वधुमधुलाकाले वार्क्येनवरावदं निवक्रान्तिनि
 वातन्दं निवन्नुयंनिवालयं॥ २॥ मूलमनुसन्धयन्मूलमन्नात्मभूषिणी॥ मूल
 कृतिवृषायंमूलरुम्भममूकयं॥ ३॥ ॐकारंवाह्नितादयः॥ ४॥ नन्दनन्दनन्दनन्दनन्दनन्दन
 ॐ॥ यैस्तुमध्वंस्तुमन्नामध्वभूषिणी॥ ४॥ मूयमानंनन्दन

मधुसूक्तं वज्रनालीसूत्रं विनी ॥ ५ ॥ वज्रनालीसूत्रं मधुसूक्तं वज्रनालीसूत्रं विनी ॥ ५ ॥
शक्रवैश्वदेवसूक्तं कृष्णलोककालसूत्रं विनी ॥ ६ ॥ जीवकृष्णलोकमधुसूक्तं याज्ञवल्क्यसूक्तं
याज्ञवल्क्यसूक्तं मधुसूक्तं हंससूत्रं मधुसूक्तं ॥ ७ ॥ हंससूत्रं जीवकृष्णलोकमधुसूक्तं
नालीसूत्रं हंससूत्रं नालीसूत्रं नालीसूत्रं मधुसूक्तं ॥ ८ ॥ विनीमधुसूक्तं मधुसूक्तं
उदयासूक्तं वायुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं ॥ ९ ॥ मधुसूक्तं मधुसूक्तं

तिरुपयवायवो वा माया कृतानां किमर्थं वेदमना ननी ॥ १० ॥ त्रुद्वेदनाली
सूत्रं विनीमधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं ॥ ११ ॥ मधुसूक्तं
मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं ॥ १२ ॥ मधुसूक्तं मधुसूक्तं
मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं ॥ १३ ॥ मधुसूक्तं मधुसूक्तं
मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं मधुसूक्तं ॥ १४ ॥ मधुसूक्तं मधुसूक्तं

[illegible]

सत्त्वं गजमुखकवूषार्कवैवल्लकुलुयूगम् । अरुयववदहर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र
 यतिगवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र ॥ ४ ॥ विवृधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र
 विविधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र ॥ ५ ॥ विवृधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र
 विविधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र ॥ ६ ॥ विवृधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र
 विविधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र ॥ ७ ॥ विवृधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र
 विविधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र ॥ ८ ॥ विवृधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र
 विविधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र ॥ ९ ॥ विवृधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र
 विविधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र ॥ १० ॥ विवृधमयस्वलीलं यद्गवर्गमिक्कृषागर्गकृष्णार्कवत्र

श्रीगणेशाय नमः ॥ गजवदनमविर्गती कलदंतीति नमः बृहद्दन्तमसंघं हृतवा
र्यं पूजार्थं । अमरवन्तयूथं वक्रवर्णसूनेन प्रधुपतिभूतमीर्त्तविभूतार्थं नमामि ॥ १ ॥
निवर्तनयवृक्षं सर्वकोल्यातमूर्तिं यत्र पुदयनकदम्बमाहितिभादकस्य । अनूलाक
पुममालाद्याललवोदनेन मम हृदयनिवासं श्रीगणेशं नमामि ॥ २ ॥ निगमविनन्दन
धर्मं विद्वानन्दनूर्यं यद्वृत्तिपूज्यमन्यरुकिमुक्तिप्रदं । हरिजहृतिरुनामसिद्धि
वक्रनूर्यं जगदीशिलनिवाणं श्रीगणेशं नमामि ॥ ३ ॥ विमलकनकवर्णपूज्यलक्ष्मी

ॐ नमो गणेशाय विद्वन्धराय ॥ गणपतिश्च लम्बा विद्वन्नाडा विनायकः ॥ यदीयुषामहानः
आमहावलयाक्रमः ॥ १ ॥ महादन्त
दीपि विनन्दनगणनायकः ॥ २ ॥ अक्षमा
दाहं वामहस्तविवादिनी ॥ ३ ॥ नाना
विनागनी ॥ ४ ॥ यदासूतमनुरागा

महाकायः कदम्बमहानः ॥ अमरवन्तमह
लाखदन्तः कदम्बमहानः ॥ अमरवन्तमह
गन्धानुलपिनी नागयक्षाघवीमाङ्गः ॥ अमरवि
विनायकः ॥ ५ ॥ यदासूतमनुरागा

